A3

A4

A5

दृष्टि The Vision

हिन्दी साहित्य
(Hindi Literature)

टेस्ट–8
(द्वितीय प्रश्न-पत्र)

Mentorship Program
Mukherjee Nagar

DTVF OPT-23 **HL-2308**

निर्धारित समय: तीन घंटे Time Allowed: Three Hours	अधिकतम अंक : 250 Maximum Marks : 250

नाम (Name): Pritesh Singh Rajput

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? हाँ ✓ नहीं

मोबाइल नं. (Mobile No.):

ई-मेल पता (E-mail address):

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): 10/08/23

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2023] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2023]:

7	7	0	8	5	1	1

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS.***

*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*

*Questions no. 1 and 5 are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** question from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answer must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): ____ टिप्पणी (Remarks): ____

मूल्यांकनकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Evaluator (Code & Signatures)

पुनरीक्षणकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Reviewer (Code & Signatures)

Feedback

1. Context Proficiency (संदर्भ दक्षता)
2. Introduction Proficiency (परिचय दक्षता)
3. Content Proficiency (विषय-वस्तु दक्षता)
4. Language/Flow (भाषा/प्रवाह)
5. Conclusion Proficiency (निष्कर्ष दक्षता)
6. Presentation Proficiency (प्रस्तुति दक्षता)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

खण्ड - क

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

1. निम्नलिखित गद्यांशों की लगभग 150 शब्दों में संदर्भ-प्रसंग सहित व्याख्या लिखिये:

$10 \times 5 = 50$

(क) दुनिया में यह सब तो चलता ही रहता है, तुम अकेली कहाँ तक लड़ोगी?..... किसी चीज से अगर सचमुच प्यार हो या वह कीमती हो तो टूट-फूट जाने पर भी उसका मोह नहीं जाता।

संदर्भ प्रस्तुत गद्यांश 'एक दुनिया समानांतर' की कहानी 'नन्हों' से लिया गया है।

प्रसंग प्रीति की माँ नन्हों को तलाक के बाद नई ज़िन्दगी प्रारंभ करने की सलाह दे रही है।

व्याख्या

प्रीति की माँ नन्हों से कहती है कि अब तुम्हें भूतकाल की बातें भूलकर आगे बढ़ जाना चाहिये क्योंकि जो हुआ है वह चलता ह रहता है। तुम अकेली दुनिया से कब तक लड़ती रहोगी। यदि किसी चीज से प्यार हो और उसका साथ छूट जाये तो उसका मोह ज़िन्दगी भर नहीं रखना चाहिए।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

विशेष

① भविष्य की ओर बढ़ने भूतकाल को बदला को छोड़ने का उद्देश्य बताया गया है।

② प्यार और उसके बाद की टूटन का उल्लेख है।

③ सरलवाचक शब्द का प्रयोग कर कथन को प्रभावी बनाया गया है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) जब समस्त हिन्दू जाति की एक वैदिक सम्प्रदाय न रही तो वही मसल चरितार्थ हुई कि "एक नारि जब दो से फँसी जैसे सत्तर वैसे अस्सी"। हमारी एक हिन्दू जाति के असंख्य टुकड़े होते-होते यहाँ तक खण्ड हुए कि अब तक नये-नये धर्म और मत-प्रवर्त्तक होते ही जाते हैं।

संदर्भ ~~प्रस्तुत गद्यांश ऐतिहासिक कल्पना पर आधारित 'यशपाल' के रचना 'दिव्या' से लिया गया है~~

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) तुम मेरे सम्पूर्ण जीवन के प्रयत्नों को, अपने वंश के भविष्य को एक युवती के मोह में नष्ट कर देना चाहते हो! महापण्डित चाणक्य ने कहा है, "आत्मनं सततं रक्षेत दारैरपि धनैरपि।" पुत्र, स्त्री भोग्य है। मति-भ्रम होने पर मोह में पुरुष स्त्री के लिये बलिदान होने लगता है। वत्स, ऐसी ही परिस्थिति में नीतिज्ञ महत्त्वाकांक्षी और परलोककामी पुरुष के लिये नारी को पतन का द्वार कहते हैं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

संदर्भ ~~प्रसंग~~ प्रस्तुत गद्यांश हिन्दी के आधुनिक रचनाकार 'यशपाल' के 'दिव्या' से लिया गया है।

प्रसंग जब पृथुसेन दिव्या से विवाह न होने पर विषादग्रस्त रहता है तब उसके पिता प्रेस्थ द्वारा यह कथन कहा जाता है।

व्याख्या

पुत्र तुम मेरे पूरे जीवन के प्रयत्नों के एक युवती के लिये समाप्त कर रहे हो। स्त्री भोग की वस्तु है, यदि मन में भ्रम रहता है तो पुरुष स्त्री के लिये आत्मबलिदान कर लेता है। यह स्थिति नीतिज्ञों में नारी को पतन का द्वार माना गया है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विशेष —

① स्त्री को भोग की वस्तु कहकर पुरुषवादी मानसिकता को दिखाया गया है।

② चाणक्य के कथन का सटीक उदाहरण के रूप में प्रयोग हुआ है।

③ भाषा तत्समी है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) मैं खुद अपने आगे खड़ा हूँ, मान्यताओं की सलीब पर टँगा हुआ, लहूलुहान!.... पत्थर का एक बहुत बड़ा ढ़ेर है और लोग आँखें मूँदकर पत्थर मारते हैं.... लोग फूल चढ़ा रहे हैं मान्यताओं पर..... आदमी को बार-बार की नोची-छिछड़ी को दाँतों से नोंच-नोंचकर फेंक रहे हैं.... लोग नंगी औरत के कोमल शरीर को खुरदरे जूट के रस्सों से जकड़कर बाँध रहे हैं..... सिर्फ एक लाचारी का आरोप..... आदमी नहीं, टूटा हुआ, पुराना खण्डहर..... आखिर क्यों?

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) प्रत्येक परमाणु के मिलने में एक सम है, प्रत्येक हरी पत्ती के हिलने में एक लय है। मनुष्य ने अपना स्वर विकृत कर रखा है। इसी से तो उसका स्वर विश्व-वीणा में शीघ्र नहीं मिलता। पांडित्य के मारे जब देखो, जहाँ देखो बेताल-बेसुरा बोलेगा। पक्षियों को देखो, उनकी 'चहचह', 'कल-कल', 'छलछल' में, काकली में, रागिनी है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

संदर्भ) प्रस्तुत गद्यांश जयशंकर प्रसाद जी के प्रमुख नाटक 'स्कंदगुप्त' से लिया गया है।

प्रसंग) विजया और देवसेना के मध्य संवाद हो रहा है।

व्याख्या) -

विजया देवसेना से कहती है कि प्रत्येक परमाणु में एक समानता है, पत्तियों के हिलने में एक लय है, यदि मनुष्य अपनी लयता नहीं रखेगा तो बाद में विश्व की लय में मिलना मुश्किल होगा। व्यक्ति अपनी ज्ञानता के भ्रम में जो मन में आता है बोलते जाता है। मानव को पक्षियों की चहचहाट, नदियों की कल-कल को भी सुनना चाहिये।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विशेष

① महाते का सुंदर वर्णन किया गया है।

② महाते को संगीतमय माना गया है।

③ रूपक अलंकार का प्रयोग किया गया है।

④ भाषा में तत्सम शब्दों की बहुलता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

2. (क) 'गोदान' उपन्यास के 'होरी' और 'गोबर' की तुलना करते हुए बताइए कि आपके मत में इनमें से कौन संभावनाशील चरित्र है? 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

4. (क) 'नई कहानी' के भीतर अमरकांत के वैशिष्ट्य को 'ज़िंदगी और जोंक' कहानी के आधार पर लक्षित कीजिये। 20

'नई कहानी' 1960 के दशक में भारती हिन्दी साहित्य में अपना परचम लहराया यह 'नई कहानी' की स्थिति पश्चिम में 'न्यू स्टोरी मूवमेंट' पर आधारित व समाहित है।

हिन्दी में 'नई कहानी' को 'एक दुनिया समानांतर' के कहानी से प्रारंभ माना जाता है। इस कहानी ~~कहा~~ संग्रह में जिंदगी को यथार्थ को दिखाता एक कहानी है- 'जिंदगी और जोंक'. इस कहानी को अमरकांत द्वारा भोगे हुए यथार्थ के साथ 'मैं' बनकर लिखे है।

अमरकांत 'नई कहानी' के मूल आधार अजनबीपन, आत्मनिर्वासन तथा एकांत को आधार बनाए, इन्हीं सब घटनाओं से ~~भीड़~~ पीड़ित एक व्यक्ति रघुवा (रघु) अमरकांत के गांव में आता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

अमरकांत रघु के जीवन के बारे में बताते हैं कि वह प्रारंभ में दबा हुआ महसूस करता था किंतु धीरे-धीरे वह गांव में 'साला रघुवा' के नाम से प्रसिद्ध हो गया।

सभी व्यक्तियों की तरह वह भी अपने आजीविका चलाने के लिये कड़ी मेहनत करता किंतु उसे कोई उसका मेहताना नहीं देते जिससे वह भीख मांगकर खाता जाता था।

~~अन्य जीविषा~~

प्रथम जिजीविषा के बाद जिंदगी को अंत हार गया और मृत्यु को प्राप्त किया। अमरकांत के मन में उसके प्रति दोहरी मानसिक स्थिति थी, यह नई कहानी की मानसिक द्वन्द्वता को दिखाता है।

रघु से काम लेने के बाद भी वेतन/पैसा न देना उस समय के बेगारी को प्रदर्शित करता है तथा यह मार्क्सवाद

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

के शोषणकारी व्यवस्था का द्योतक है।

इस कहानी के माध्यम से अमरकांत यह दिखाते हैं कि कोई बेसहारा और मासूम व्यक्ति पर समाज कैसा-कैसा जुल्म करता है। इसके मृत्यु पर कोई रोने वाला न दिखाकर समाज के असंवेदनशीलता की प्रस्तुति भी की गई है।

अंत में अपने मनोवैज्ञानिकता चिंतन का प्रयोग कर मनन करते हैं कि रघु जोंक की भांति भांति जिंदगी से चिपका था या जोंक रघु की जिंदगी से चिपक कर सारा खून पी गया।

पूरा कहानी अमरकांत के वैशिष्ट्य को प्रदर्शित किया है। यह कहानी जीवन के जिजीविषा को प्रदर्शित करता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'स्कंदगुप्त' नाटक के नामकरण पर विचार कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

किसी भी रचना का नाम उसकी आत्मा होती है, नाम ही सर्वप्रथम पाठक को आकर्षित करता है। यदि नाम आकर्षक हो तो यह अपनी विचारधारा को प्रभावी तरीके से प्रस्तुत करना प्रारंभ कर सकता है।

नामकरण के अनेक कसौटी माना गया है –

① नाम छोटा व प्रभावी हो।
② पूरे कथानक में घुला-मिला हो।
③ कथानक में मूल प्रधान इसी का हो।

इन कसौटियों के आधार पर 'स्कंदगुप्त' के नामकरण पर विचार कर सकते हैं।

① इसका नाम छोटा है तथा 'स्कंदगुप्त' भारतीय इतिहास का प्रसिद्ध राजा रहा है, नाम पढ़ते ही दिमाग में उसकी कहानी याद आ जाती है और लिखे कहानी के प्रति पाठक का उत्सुकता बढ़ जाता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

② 'स्कंदगुप्त' एक चरित्र प्रधान नाटक है पूरा कथानक स्कंदगुप्त के आस-पास ही बुना गया है।

③ यदि नायक/नायिका की प्रधानता की बात करें तो स्कंदगुप्त ही अंत में पाठक के मन में स्थान बना पाता है।

यदि 'स्कंदगुप्त' का नाम 'स्कंदगुप्त' न रखते तो क्या रखते? इस प्रश्न के जवाब में इस नाटक को चरित्र पर विचार करके किया जा सकता है, यदि इसे स्थिति प्रधान मानें तो 'युद्धभूमि' रख सकते हैं नायिका प्रधान माने तो देवसेना, ~~भीमवर्मा~~ रख सकते हैं वहीं यदि रस को प्राप्ति को बल दें तो अंत में आनंद रस की प्राप्ति होने पर 'आनंद रस की कहानी' कहा जा सकता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision | 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

किंतु इस नाटक की प्रकृति नायक व चरित्र प्रधान है जिसमें स्कंदगुप्त, भीमवर्मा इत्यादि नाम आता है फिर भी चरित्रों की प्रधानता के आधार पर हमें 'स्कंदगुप्त' का ही चयन करना होगा. क्योंकि बाकि चरित्र अपनी सार्थकता साबित नहीं कर पाते।

अतः 'स्कंदगुप्त' नाम सर्वश्रेष्ठ एवं प्रभावी है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision | 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'आषाढ़ का एक दिन' नाटक की वर्तमान उपादेयता पर विचार कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'आषाढ़ का एक दिन' मोहन राकेश के सर्वश्रेष्ठ नाटकों में से एक है। इस नाटक प्रमुख प्रतिपाद्य सृजनशीलता व सत्ता का द्वन्द्व के साथ प्रासंगिकता की खोज है।

'आषाढ़ का एक दिन' ऐतिहासिक चरित्र व इतिहास के तनिक बोध पर आधारित है। यह वर्तमान में भी अपनी प्रासंगिकता को कायम रखा है-

① सृजनशीलता व द्वन्द्व का विषय प्रत्येक काल में उत्पन्न होता है यह भारतेंदु व निराला के समय से आज तक साहित्य की गिरती लोकप्रियता के कारण उत्पन्न हुआ है।

② आधुनिकता व शहरीकरण से व्यक्ति अपनी स्वतंत्रता खो दिया है. इस नाटक की तरह आज भी व्यक्तियों अपनी सामाजिक

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

को खोज की आवश्यकता है।

③ अंबिका और मल्लिका के मध्य पीढ़ीगत द्वन्द्व आज कम्प्युटर व तीव्र गति से बदली विचारधारा के कारण दिखाई देता है।

④ कालिदास का ~~आदि~~ प्रकृति के प्रति प्रेम भाव वर्तमान में जलवायु परिवर्तन व पर्यावरण संकट को कम कर सकता है।

⑤ कालिदास का लेखन को छोड़कर राजनीति के प्रति उन्मुख होना, आज के समय में लेखकों का राजनीति में शामिल होना तथा राजनेताओं की तारीफ करने को दर्शाता है।

⑥ कालिदास का अपने गाँव के प्रति 'नोस्टाल्जिक प्रेम' वर्तमान में भी शहरों के व्यक्तियों में स्वतः ही दिख जाता है।

इस प्रकार मोहन राकेश का नाटक 'आषाढ़ का एक दिन' भले ही

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

इतिहास के साथ अपने समय को दर्शाने लिखा गया है किंतु यह वर्तमान की घटनाओं व परिस्थिति पर भी सटीक बैठता है, यह मोहन राकेश की दूरदर्शिता का ही परिणाम है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

खण्ड - ख

5. निम्नलिखित गद्यांशों की लगभग 150 शब्दों में संदर्भ-प्रसंग सहित व्याख्या लिखिये:

10 × 5 = 50

(क) सचमुच कुछ प्रश्नों की सफलता इसी बात में होती है कि हम उस प्रश्न तक पहुँच गये हैं। उस प्रश्न का उत्तर भी हो, इसकी अपेक्षा वहाँ नहीं रहती। दूसरे शब्दों में, ऐसे प्रश्न का सही उत्तर यही होता है कि यह जिज्ञासु भाव लेकर हम जीवन की ओर लौट आयें और उसे जिज्ञासुवत् हो जियें।

संदर्भ प्रस्तुत गद्यांश आधुनिक भारत के प्रसिद्ध कथाकार सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' द्वारा रचित निबंध 'संवत्सर' से लिया गया है।

प्रसंग इस गद्यांश में प्रश्न और महत्व की चर्चा की गई है।

व्याख्या

अज्ञेय कहते हैं कि कुछ प्रश्नों की सफलता यह होती है कि वह वास्तविक प्रश्नों तक पहुँचे एवं प्रश्नों के उत्तर भी प्राप्त हो जाए, किंतु कुछ प्रश्नों का उत्तर नहीं होता और हमें वापस प्रश्नों की ओर लौटना पड़ता है इसी तरह हमें जीवन के प्रत्येक प्रश्नों का हल मिले

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

यह आवश्यक नहीं है हमें जिज्ञासा का भाव लेकर वापस जीवन की ओर लौट आना चाहिये।

विशेष

① प्रश्न करने के महत्व को बताया गया है।

② प्रश्नों के पीछे न पड़ कर जीवन का आनंद लेना चाहिये।

③ प्रश्नों के विषय को लेकर जीवन की सत्यता बताया गया है।

④ भाषा सरल व सहज है जिससे पाठक निबंध से बंधा रहता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) एक चीज थी जिसे तुम नष्ट कर देना चाहते थे और वह नष्ट हुई, यह प्रमाणित करते हुए कि वह है। मैं जानती हूँ, कि वह है और दो बार तुम उस पर आक्रमण कर चुके हो और वह उन्हें बचा गया है।

संदर्भ प्रस्तुत गद्यांश 'एक दुनिया समानांतर' की प्रमुख कहानी 'विजेता' से लिया गया है।

प्रसंग जब नायक द्वारा अपनी पत्नी के गर्भपात कराने के संबंध में पत्नी द्वारा कहा गया है।

व्याख्या

आधुनिकता के कारण व्यक्ति अब बच्चों के जन्म को भी अपने हाथों से निर्णय करते हैं इसी संदर्भ में नायक द्वारा नायिका (पत्नी) की गर्भपात के लिये दो बार प्रयास किया गया लेकिन बच्चा बच गया। पत्नी कहती है कि तुम तुम दो बार आक्रमण किये लेकिन वह अभी भी बच गया है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

विशेष

① आधुनिक काल में गर्भपात के बढ़ते घटना पर कटाक्ष किया गया है।

② भ्रूण हत्या को दर्शाता है।

③ भाषा सरल व सहज है।

④ मनोवैज्ञानिक विषय पर आधारित है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) कोई पीछे नहीं है, यह बात मुझमें एक अजीब किस्म की बेफिक्री पैदा कर देती है। लेकिन कुछ लोगों की मौत अन्त तक पहेली बनी रही है; शायद वे जिन्दगी से बहुत उम्मीद लगाते थे। उसे ट्रैजिक भी नहीं कहा जा सकता, क्योंकि आखिरी दम तक उन्हें मरने का अहसास नहीं होता।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) कष्ट हृदय की कसौटी है, तपस्या अग्नि है। सम्राट! यदि इतना भी न कर सके तो क्या! सब क्षणिक सुखों का अंत है। जिसमें सुखों का अंत न हो, इसलिये सुख करना ही न चाहिये। मेरे जीवन के देवता! और उस जीवन के प्राप्य! क्षमा।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संदर्भ प्रस्तुत गद्यांश प्रसिद्ध नाटककार जयशंकर प्रसाद जी के नाटक 'स्कंदगुप्त' से लिया गया है।

प्रसंग देवसेना और स्कंदगुप्त के मध्य संवाद से है जहाँ देवसेना स्कंदगुप्त से विवाह न करने पर क्षमा मांगती है।

व्याख्या

देवसेना कहती है कि हे सम्राट! कष्ट पाना हृदय की कसौटी है तपस्या अग्नि के समान है। जीवन में सभी सुख और दुःख क्षणिक मात्र है। सुखों का अंत होता नहीं है इसलिये सुखों की इच्छा भी नहीं करना चाहिये। मेरे सम्राट मुझे क्षमा करना, आप मेरे इस जीवन के देवता हो और उस जीवन में भी प्राप्य होगे।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विशेष

① नारी के त्याग व तपस्या का गहन विश्लेषण है।

② बौद्धधर्म के क्षणिकवाद का प्रभाव दिखता है।

③ नारी के आदर्श रूप को वर्णित किया गया है।

④ भाषा में तत्सम शब्दों की बहुलता से थोड़ा कठिनता आती है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) संभवत: पहचानती नहीं हो और न पहचानना ही स्वाभाविक है क्योंकि मैं वह व्यक्ति नहीं हूँ जिसे तुम पहचानती रही हो। दूसरा व्यक्ति हूँ, और सच कहूँ तो वह व्यक्ति हूँ जिसे मैं स्वयं नहीं पहचानता हूँ।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संदर्भ

प्रस्तुत गद्यांश मोहन राकेश के नाटक 'आषाढ़ का एक दिन' से लिया गया है।

प्रसंग

कालिदास जब कश्मीर से वापस अपने गाँव आता है तो मल्लिका उसे पहचान नहीं पाती तब कालिदास कहता है।

व्याख्या

शायद तुम मुझे नहीं पहचानती, न पहचानना स्वाभाविक भी है क्योंकि मैं बदल गया हूँ, मैं वह व्यक्ति नहीं रहा जो पहले गाँव में था। कालिदास कहता है कि सच्च यह है कि मैं स्वयं अपने आप को भी नहीं पहचानता तो तुम कैसे पहचानोगी।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

विशेष

① व्यक्ति के आत्मबोध के पतन होने को दर्शाया गया है।

② यह प्रासंगिकता के साथ वर्तमान में मानव के गुमनाम स्थिति का वर्णन करता है।

③ भाषा सरल व सहज तथा बोधगम्य है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

6. (क) प्रेमचंद द्वारा गोदान में शहरी कथा के समावेश के क्या कारण हो सकते हैं? संभावित कारणों में कौन-सा कारण आपको सर्वाधिक प्रबल प्रतीत होता है? 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

7. (क) आंचलिक होते हुए भी मैला आँचल अपनी आंचलिकता का अतिक्रमण करता है और राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य का साक्षात्कार करता है। आप इस मत से कहाँ तक सहमत हैं? 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'मैला आँचल' हिन्दी साहित्य के इतिहास में आंचलिकता को पूर्ण रूप प्रदान करी है। फणीश्वरनाथ रेणु ने इसकी भूमिका में इसे स्वीकार भी किया कि-

'यह है मैला आँचल, एक आंचलिक उपन्यास'

किंतु सूक्ष्मता से विश्लेषण करें तो हमें ज्ञात होता है कि यह आंचलिकता के साथ सम्पूर्ण राष्ट्र को अपने अंदर समाए रखा है। इसे निम्नलिखित बिंदुओं के आधार पर समझ सकते हैं—

① मेरीगंज एक गांव है ऐसा गांव भारत जैसे ग्रामीण परिवेश के राष्ट्र में प्रत्येक जिला में मिल सकता है।

② जिस प्रकार मेरीगंज में समाज राजपूत, कायस्थ यादव जैसे दलों में विभाजित है राष्ट्र में भी यह विभाजन दिखाई देता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

③ गांव के अनेक लोगों में जैसे जोतखी काका में अंधविश्वास है वैसे ही देश के दुर्गम क्षेत्रों में अभी भी अंधविश्वास व्याप्त है।

④ दलों में आपसी मतभेद बाह्य रूप से साथ हो आंतरिक रूप स्वतंत्र काल से आधुनिक काल तक सर्व व्याप्त है।

⑤ बावनदास की मृत्यु को गांधी जी की मृत्यु के रूप में देखा जा सकता है जिसे राजनीतिक अव्यवस्था का सजा मिलता है।

⑥ 'गरीबी' और 'जहालत' केवल मेरीगंज के ही जीवाणु नहीं है, यह जीवाणु पूरे भारत में ~~व्याप्त~~ व्याप्त है जिसका वर्णन 'गोदान' में प्रेमचंद जी द्वारा समग्रता से किया गया है।

दृष्टि The Vision | 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

⑦ जिस प्रकार मेरीगंज की कहानी 'मैला आंचल' को अंचल श्यामल है वैसे ही स्वतंत्रता पश्चात का परिदृश्य पूरे भारत वर्ष में है, सभी जगह गरीबी, शोषण, रोग का वर्चस्व है।

⑧ 'मैला आंचल' में सांस्कृतिक पक्ष को भी उभारा गया है, यह संस्कृति भारत की पहचान है न कि केवल मेरीगंज का।

अतः कहा जा सकता है कि स्थूल रूप में 'मैला आंचल' आंचलिकता को धारण करती है लेकिन यदि हम सूक्ष्मता से गहन विश्लेषण करें तो आंचलिकता का अतिक्रमण कर यह राष्ट्रीयता को प्रस्तुत करती है।

दृष्टि The Vision | 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'अलग्योझा' कहानी के कथ्य का विश्लेषण कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'अलग्योझा' प्रेमचंद जी के शुरूआती कहानियों में से एक है। अलग्योझा अपनी कथ्य में पारिवारिक विघटन, परम्परागत परिवार का प्रचलन व बेमेल विवाह को समेट रखा है।

भोला व पन्ना का बेमेल विवाह होता है यह पहला उपकहानी है। भोला के मृत्यु के पश्चात रघु पारिवारिक प्रचलन के अनुसार घर को संभालता है एवं उसका विवाह भी बेमेल होता है।

तिसरी उपकहानी में मुलिया (रघु की पत्नी) व केदार का आकर्षण और विवाह का दृश्य आता है।

सभी अवांतर कथाएँ बेहतरीन तरीके से जुड़ा हुआ है, कथानक में किसी भी प्रकार का बहता नहीं आता। भाषा सरल व सहज है जिससे पाठक को उबाऊ नहीं

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

होता है। मुहावरों व लोकोक्तियों का भी समावेशन किया गया है।

प्रेमचंद जी का 'अलग्योझा' के माध्यम से उद्देश्य देना था कि संयुक्त परिवार सभी परिस्थिति व संकटों से लड़ने में और उससे बाहर निकलने के लिये सहायता करता है, फिर चाहे भोला की मृत्यु के पश्चात पन्ना हो या रघु के जाने के बाद मुलिया। सभी का सहारा संयुक्त परिवार होता है।

यहाँ प्रेमचंद जी समाज में बेमेल विवाह के ऊपर भी कटाक्ष करते है और दिखाते है कि बेमेल विवाह से पति या पत्नी के ऊपर संकट आ जाती है एवं प्राकृतिक एवं स्वभाविकता के साथ समान विचारधारा व उम्र के व्यक्ति

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

के प्रति आकर्षण को भी दिखाते है।

किंतु प्रेमचंद यहाँ आदर्शवाद का समावेशन करते है और अंत में रघु का पन्ना के प्रति योगदान के साथ केदार का मुलिया का हाथ ~~थामना~~ थामना जैसे हृदय परिवर्तन की घटना को अंजाम दे देते है।

अलग्योझा समाज में टूटते परिवारों के लिये एक मार्गदर्शिका के रूप में आज भी अपनी प्रासंगिकता बनाए रखा है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'महाभोज' उपन्यास में निहित नाटकीयता के उन बिंदुओं को रेखांकित कीजिये जिनके कारण उसका नाट्य-रूपांतरण रंगमंच पर सफल सिद्ध हुआ है। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

'महाभोज' मन्नु भण्डारी जी का राजनीतिक परिदृश्य पर लिखा हिन्दी साहित्य के राजनीतिक रचनाओं में प्रमुख स्थान रखता है।

'महाभोज' भले ही अपनी मूल प्रकृति में उपन्यास है किंतु इसमें नाटकीयता के तत्व की उपस्थिति ने ने इसे रंगमंच पर भी उतार दिया है। इसमें निहित नाटकीयता के निम्नलिखित बिंदु हो सकते हैं→

① कथानक सरल-सीधा और सपाट है, कोई अवांतर कथा मूल कथा से भटका हुआ नहीं है।

② अभिनय के दृष्टि से पर्याप्त संकेत मिल जाता है जैसे –

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

i) बिसू का पिता रोते हुए बोलता है–

"बिसू बहुत तड़पता था साहब, कभी-कभी तो ..."

ii) बिंदा गुस्से में रहता है।

③ रंगमंच के पर्दों में भी ज्यादा परिवर्तन की आवश्यकता नहीं पड़ती। इसे 4 पर्दों में ही मंचित किया जा सकता है–

i) बिसू की मौत का दृश्य

ii) चुनाव का दृश्य

iii) दा साहब का राजनीतिक घटना

iv) अंत में लपकती आग की लौ'

④ भाषा भी सरल-सहज और पाठकों को बांधे रखने योग्य है, जिसमें पात्रों के अनुसार भाषा है –

दा साहब – This is clear case of suicide.

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

~~⑤ वेशभूषा~~

⑤ वेशभूषा भी साधारण व स्वत: ही ज्ञात हो जाता है। जैसे –

नेता – कुर्ता का प्रयोग व बंगाली का

पुलिस – पुलिस वर्दी

गांव के व्यक्ति – सामान्य कमीज, धोती

⑥ पात्रों द्वारा मनन की भाषा कम और एक दूसरे से संवाद ज्यादा लिये है जो रंगमंच हेतु महत्वपूर्ण होता है।

किंतु सभी जगह यह दृश्य प्रधान नहीं है या साहब के मानसिक स्थिति को मंच में दिखाना कठिन होगा, तथा रंगसंकेत व ध्वनि संकेत भी कम है।

फिर भी हमें ध्यान रखना होगा की यह उपन्यास है नाटक नहीं। उपन्यास होते हुए भी इसका रंगमंचन हेतु कुछ स्वयं से अनुमान कर सफल मंचन किया जा सकता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

8. (क) क्या 'भारत-दुर्दशा' को 'त्रासदी' माना जा सकता है? अपना मत प्रकट कीजिये। 20

'भारत-दुर्दशा' भारतेंदु हरिश्चंद्र का सर्वश्रेष्ठ नाटकों में से एक है जिसे 1875 ई. में लिखा गया।

कुछ आलोचकों का मत है कि 'भारत-दुर्दशा' एक 'त्रासदी' है। त्रासदी नाटक अरस्तवी परम्परा में प्रसिद्ध है जहाँ नाटक का अंत त्रासद की भाव के साथ होता है। कोई भी रचना त्रासद है या नहीं इसके लिये कुछ मापदण्ड है –

(i) नायक उदात्त हो।

(ii) नायक एक बड़ी नैतिक भूल किया हो। जिसे 'हैमार्शिया' कहते हैं।

(iii) नायक का प्रभाव उपनायक से ज्यादा हो।

(iv) खलनायक का अंत में विजय तथा नायक का पराजय या मृत्यु हो जिससे पाठक के मन में 'विरेचन' का भाव उत्पन्न हो।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

उपरोक्त आधारों पर 'भारत-दुर्दशा' को कसते हैं —

① 'भारत-दुर्दशा' में नायक उदात्त नहीं है वह तो खलनायक के पछाड़ सुनकर ही बेहोश हो जाता है।

② नायक को कोई नैतिक भूल नहीं हुई जिससे खलनायक को बल/शक्ति मिले, बल्कि भारत की आंतरिक कमजोरी ही भारत-दुर्दैव (ब्रिटिश) को बिना ज्यादा प्रयास के पराधीनता के लिये जिम्मेदार है।

③ कभी-कभी उपनायक (भारतभाग्य) का प्रभाव नायक (भारत) से ज्यादा हो जाता है।

④ अंत में 'भारत' उठता ही नहीं है वह दुर्दैव से लड़ाई भी नहीं करता, पाठक या दर्शक के मन में गहन दुःख अर्थात् विरेचन का भाव आ ही नहीं पाता।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अतः स्पष्ट है कि पश्चिम के यशस्वी परम्परा के त्रासदी के कसौटी पर 'भारत-दुर्दशा' नहीं आता।

किंतु इसका अंत भारतीय परम्परा के रचनाओं के सुखांत की तरह भी नहीं है। इसका प्रमुख कारण है कि भारतेंदु भारतीयों में राष्ट्रवाद की भावना जगाना चाहते थे यदि सुखांत अंत करते तो भारतीय जनता अपने आंतरिक कमजोरी को दूर न कर सुखांत में लीन रहते।

इसके साथ ही हमें यह ध्यान रखना होगा कि भारतेंदु त्रासदी लिखने की कोशिश नहीं कर रहे थे अतः इसे त्रासद की कसौटी पर पूर्णतः कसना नहीं चाहिये।

इस भारतीय परम्परा से इतर सुखांत के स्थान पर भारत की दुर्दशा को

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

ध्यान में रखकर और पश्चिम के विवेचन को स्थिति पर विवेचन न हो होने के आधार पर इसे यथार्थ के स्थान पर 'मिथ्रांत' कह सकते हैं। लेकिन यह उद्भ्रांत के ज्यादा नजदीक है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'रेणु का कथा शिल्प कहा आंचलिक जाता है जो एक माने में ठीक है, पर उपन्यास की दृष्टि में सम्पूर्ण जातीय जीवन एक साथ समोया हुआ है।' यदि ऐसा है तो क्या हम मान सकते हैं कि 'गोदान' के बाद की कथा 'मैला आँचल' कहता है? 15

फणीश्वरनाथ-रेणु ने अपने रचना 'मैला आंचल' की भूमिका में रचना को आंचलिक उपन्यास कहे है–

'यह है मैला आंचल, एक आंचलिक उपन्यास'

किंतु यह आंचलिक होने के बाद भी अपनी सूक्ष्म रूप में राष्ट्रीयता के साथ सम्पूर्ण जातीय जीवन को समोया हुआ है।

कुछ आलोचकों ने इसे 'गोदान' का ~~मानिक~~ प्रतिनिधि के रूप में स्वीकार किये हैं। यदि हम दोनों उपन्यासों की तुलना करे तो यह वाक्य स्पष्ट होगा कि 'गोदान' के बाद की कथा मैला आंचल कहता है–

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

① 'गोदान' में किसानों की स्थिति पर समग्र विवरण प्रस्तुत किया है जो स्वतंत्रता पूर्व की है तो वहीं स्वतंत्रता पश्चात भी किसानों की शोषण को 'मैला आंचल' दिखाता है।

② 'गोदान' में राजनीतिक विद्रूपता का अंकन गहरी वर्ग में दिखाया गया है तो एक कदम आगे बढ़कर 'मैला आंचल' में गांव में राजनीति कलह व आंतरिक घमासान का वर्णन है।

③ आधुनिकता और परम्परागत विचारों का द्वन्द्व होरी और गोबर के मध्य है तो 'मैला आंचल' में यह अंधविश्वास का रूप धारण कर जोतकी काका व डॉ. प्रशांत के मध्य है।

④ वर्ण व्यवस्था 'गोदान' में भी है जिसे शोषण का पर्याय कहा गया है तो 'मैला आंचल' में यह वर्ण ~~व्यवस्था~~ व्यवस्था जाति व्यवस्था के रूप में कायस्थ, ब्राम्हण, राजपूत, यादव के रूप में है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

⑤ 'गोदान' में सांस्कृतिक परिदृश्य का अधूरा स्वरूप है तो इसे आगे बढ़ाते हुए 'मैला आंचल' में सांस्कृतिक आधार को प्रमुख मान्यता देते हुए समग्र अंकन किया गया है।

किंतु कुछ बिंदुओं जैसे भाषा, कथानक और यथार्थ का जो मिश्रण 'गोदान' की अलग पहचान बनाया है वहीं 'मैला आंचल' आंचलिकता से अलग राह में दिखाई देता है।

फिर भी दो लेखकों के रचनाओं में थोड़ा अंतर तो रहता ही है। उपरोक्त बिंदु स्पष्ट करता है कि 'मैला आंचल' 'गोदान' के बाद की कथा कहता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'कफन' की संवेदना पर विचार कीजिये। क्या यह कहानी दलित-विरोधी है? 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'कफन' प्रेमचंद जी के ~~...~~ कहानियों की श्रृंखला में यथार्थवाद की चरम स्थिति को प्रदर्शित करता है।

'कफन' एक दलित परिवार की कहानी है. इसमे घीसू और माधव ~~के अपने~~ परिवार के स्थिति का दयनीयता पर विचार किया गया है।

प्रेमचंद 'कफन' में संवेदना पर विस्तृत वर्णन करते हैं कि गरीबी के कारण घर की स्थिति ऐसी है कि माधव की पत्नी प्रसव पीड़ा से तड़प रही है फिर भी इलाज के लिये पैसा ही नहीं. इस संदर्भ में कहते हैं:-

"घर से पैसा ऐसे गायब था जैसे गिद्ध के घोंसले से मांस।"

घीसू व माधव बेरोजगार हैं उनकी काम न करना उनकी आलस्यता नहीं है बल्कि

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

इस समय की परिस्थिति ही ऐसी है. उनकी स्थिति मजदूरों की तरह ही था. अर्थात् काम करके भी स्थिति को परिवर्तित नहीं किया जा सकता था। प्रेमचंद जी कहते हैं:-

"मजदूरों की स्थिति भी उनकी स्थिति से बेहतर नहीं था।"

पत्नी के मृत्यु के बाद 'कफ़न' लेने पैसा भी नहीं होता यह गरीबी की चरम स्थिति को प्रदर्शित करता है किंतु लोगों से कफ़न हेतु पैसा जुटाकर 5रू. इकट्ठा किया गया इस पर कटाक्ष किया गया -

'अगर यह पैसा पहले मिला होता तो कुछ दवा किया जा सकता था।'

प्रेमचंद जी 'कफ़न' के माध्यम से यह बताने का प्रयास करते हैं कि 1940ई. के दशक में कितना गरीबी व शोषण की स्थिति थी कि व्यक्ति अपने पत्नी की मृत्यु का इंतजार करने लगता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रेमचंद जी ऊपर यह आक्षेप लगाया जाता है कि वे 'कफ़न' को बिना जाति का उल्लेख किये भी लिख सकते थे।

किंतु प्रेमचंद जी किसी भी जाति की जातिय भावना या स्वभाव पर हमला नहीं कर रहे थे इसका जाँच हम सद्गति जैसे कहानी व 'गोदान' उपन्यास में देख सकते हैं जिसमें प्रेमचंद जी दलितों के उत्थान हेतु प्रयास किये है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

रफ कार्य के लिये स्थान
(Space for Rough Work)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation